यदि जीने के लिए मेरे पास केवल एक ही वर्ष हो

नववर्ष के दिन बहुत से काम शुरू होते हैं। अपनी शुरुआत के लिए भी यह अच्छा समय है। यह पाठ हर एक सुनने वाले को अपने जीवन को निकट से देखना सिखाने के लिए तैयार किया गया है।

एक और साल बीत गया है। समय की ऐनक में से बारह महीने और निकल गए हैं और वे कभी वापस नहीं आएंगे। 2004[1] के कैलेण्डर के अनुसार चलने की कोशिश करना उचित नहीं होगा, न ही घड़ी की सुइयों को पीछे की ओर घुमाने से कुछ लाभ होगा। वर्ष 2004 हमेशा के लिए बीत गया है और कभी लौटकर नहीं आएगा।

परन्तु परमेश्‍वर ने समय के गोदाम से निकालकर हमें ताज़ा और नई सुगंध वाला *एक नया वर्ष* दिया है। इसमें 365 दिन; 8,760 घण्टे और 525,600 सुनहरी मिनट हैं। प्रश्‍न यह है कि हम इस वर्ष का ज़्या करेंगे? एक अर्थ में 2005 A.D. प्रभु का वर्ष है। ईस्वी के लिए इस्तेमाल होने वाले अंग्रेज़ी भाषा "A.D." अर्थात *anno domini* का अर्थ है "हमारे प्रभु के वर्ष में।" एक अर्थ में, यह वर्ष हमारा है अर्थात हम इसका सही इस्तेमाल करें या व्यर्थ गंवाएं।

एक नये वर्ष के महत्व को समझाने के लिए, हमें इस विषय पर विचार करना चाहिए: "यदि जीने के लिए मेरे पास केवल यही वर्ष हो।" यदि डॉज़्टर आपसे यह कहे कि "जो कुछ किसी का लेना – देना है वह सब निपटा लो ज़्योंकि तुम केवल एक ही वर्ष ज़िन्दा रह सकते हो" तो आप ज़्या करेंगे? आप जानते हैं कि ऐसा हो सकता है। "कल के दिन के विषय में मत फूल, ज़्योंकि तू नहीं जानता कि दिन भर में ज़्या होगा" (नीतिवचन 27:1)। "... यह नहीं जानते कि कल ज़्या होगा: सुन तो लो, तुज़्हारा जीवन है ही ज़्या? तुम तो मानो भाप समान हो, जो थोड़ी देर दिखाई देती है, फिर लोप हो जाती है" (याकूब 4:14)। ज़्या यह पता चलने पर कि हम अधिक देर तक ज़िदा नहीं रहेंगे हमारे जीवन में कुछ अंतर नहीं आएगा?

मृत्यु का सामना होने पर कुछ लोगों के मूर्खतापूर्ण व्यवहार का पता चलता है। उदाहरण के लिए, एक कुज़्यात हत्यारे को मृत्यु दण्ड दिया गया, समाचार पत्रों में छपा कि

वह अन्त तक "विद्रोह में खामोश" हो गया। मृत्यु से डरे लोगों के मूर्ख बनने की सम्भावना का एक और उदहारण कैलिफोर्निया का विंनचेस्टर हाउस है। इसे बनाने में लाखों डॉलर खर्च हुए और छत्तीस वर्ष का समय लगा। इसमें सैकड़ों कमरे हैं, जिनमें बहुत से कमरे दुर्लभ आयातित लकड़ी से बनाए गए हैं। इसे बनाने की जिज्ञासा इसलिए पैदा हुई क्योंकि श्रीमती साराह विंनचेस्टर को "भविष्य बताने वाले" किसी आदमी ने बता दिया था कि जब तक वह इसे बनाती रहेगी तब तक उसकी मृत्यु नहीं होगी।

मृत्यु की वास्तविकता सचमुच हम में से अधिकतर लोगों को अपने जीवनों के बारे में गंभीरता से विचार करके उसमें बदलाव लाने के लिए विवश करती है। जब हिजकिय्याह राजा मरने पर था, तो यशायाह भविष्यवक्ता ने उससे कहा था, "यहोवा यों कहता है, कि अपने घराने के विषय में जो आज्ञा देनी हो वह दे; क्योंकि तू नहीं बचेगा, मर जाएगा" (2 राजा 20:1)। यह परामर्श हर व्यक्ति के लिए अच्छा है।

यदि मुझसे यह कहा जाए कि "तुम केवल एक वर्ष और ज़िन्दा रह सकते हो" तो क्या होगा ? इस प्रश्न पर गंभीरतापूर्वक विचार करने के बाद, मैं निम्न निष्कर्षों पर पहुंचा।

इससे मुझे मूल्यों का नया अर्थ मिल जाएगा

आज महत्वपूर्ण लगने वाली बातें मेरे लिए महत्वहीन हो जाएंगी। परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त लेखक के शब्दों को अर्थ मिल जाएगा, जिसमें उसने कहा "क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात शरीर की अभिलाषा, और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है। और संसार और उसकी अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा" (1 यूहन्ना 2:16, 17)। मेरे लिए, दुनिया एक साल के छोटे से अरसे में खत्म हो जाएगी। इसलिए सांसारिक आकर्षण मुझे पहले की तरह अपनी ओर नहीं खींच पाएंगे। क्योंकि मेरी मुख्य दिलचस्पी "सर्वदा जीवित रहने" की ही होगी।

इस ध्यान से निश्चय ही मेरा दृष्टिकोण भी बदल जाएगा:

(1) *मैं महत्वहीन विषयों पर इतना व्याकुल नहीं हूंगा।* छोटी – छोटी बातें जिनसे मैं चिढ़ जाता हूं मुझे नगण्य लगेंगी। मैं अधिक धैर्यवान, समझ रखने वाला, दयालु और प्रेम करने वाला व्यक्ति बन जाऊंगा। अपने छुपे हुए प्रेम और अनकही बातों को व्यक्त करूंगा। किसी प्रकार का संकट मुझे परेशान नहीं करेगा।

(2) *मैं जीवन का अधिक आनन्द लूंगा।* परमेश्वर चाहता है कि हम जीवन का आनन्द लें। पौलुस कहता है, "निदान, हे मेरे भाइयो, प्रभु में आनन्दित रहो" (फिलिप्पियों 3:1क)। वह यह भी लिखता है, "प्रभु में सदा आनन्दित रहो; मैं फिर कहता हूं, आनन्दित रहो" (फिलिप्पियों 4:4)।

हम में से बहुत से लोगों का स्वामी गलत है। संसार और इसकी सब वस्तुएं मनुष्य की

सेवा के लिए बनाई गई थीं, परन्तु अधिकतर लोग संसार की वस्तुओं के सेवक बन गए हैं। हो सकता है कि जीविका कमाने में हम इतने व्यस्त हो जाएं कि जीवन के लिए हमारे पास कोई समय ही नहीं रहे, जीवन का आनन्द लेने के लिए हमारे पास समय ही न हो। यह मानकर कि मैं कई वर्ष और जीवित रहूंगा, जीवन का आनन्द लेने के लिए मुझे कभी समय नहीं *मिलेगा;* परन्तु एक वर्ष ज़िन्दा रहने की बात सोचकर, मैं समय *निकाल लूंगा।*

इस नये दृष्टिकोण से मुझे न केवल संसार का नया सकारात्मक पक्ष मिलेगा बल्कि *अपने आप* का नया अवलोकन भी करने को मिलेगा। हम में से कई लोग अपनी गति धीमी नहीं करते ज़्योंकि, मन में हमें कहीं लगता है कि हम नहीं होंगे तो काम नहीं चलेगा। अब मुझे एक वर्ष में इस सच्चाई का सामना करना है कि मेरे बिना सब काम होने लगेंगे। फिर मैं ज़्यों अपने आपको उन महत्वहीन बातों पर ध्यान लगाकर परेशान करता रहूं? मुझे लगता है, कि यदि मेरे पास जीने के लिए केवल एक और वर्ष हो तो मैं जीवन का अधिक आनन्द ले सकूंगा।

(3) *मैं अपने समय को अधिक बुद्धिमज़ा से इस्तेमाल करूंगा।* हम में से अधिकतर लोग समय को ऐसे बर्बाद करते हैं जैसे हमारे पास न खत्म होने वाले समय का गोदाम हो। हम समय की कद्र नहीं करते। अमेरिकी राजनेता बेन फ्रेंकलिन ने कहा था, "तुम जीवन से प्रेम करते हो? तो फिर समय न गंवाओ; ज़्योंकि जीवन इसी से बनता है।"[2] पौलुस कहता है, "इसलिए ध्यान से देखो, कि कैसी चाल चलते हो; निर्बुद्धियों की नाईं नहीं पर बुद्धिमानों की नाईं चलो। और अवसर को बहुमोल समझो, ज़्योंकि दिन बुरे हैं" (इफिसियों 5:15, 16)।

हम में से बहुत से लोगों ने ऐसे कार्य शुरू कर रखे हैं जिन्हें हम पूरा करना चाहते हैं, लेकिन हम कहते हैं कि हमारे पास उनके लिए समय नहीं है। यदि सच्चाई पता चले, तो हमने उन्हें करने के लिए काफी समय व्यर्थ गंवाया है। मैं कई वर्षों से एक पुस्तक पर काम कर रहा हूं, लेकिन इसे पूरा करने का "समय" ही नहीं मिलता। हाल ही में मैंने एक आदमी के विषय में पढ़ा जिसने हर रोज़ एक घंटा पहले उठकर लिखने में लगाकर अपनी दिनचर्या में बिना कोई रुकावट डाले बीस से अधिक पुस्तकें लिखी थीं। जो समय हमने व्यर्थ गंवाया उसमें कितने अच्छे - अच्छे काम किए जा सकते थे! जीवित रहने के लिए केवल एक साल मिलने पर लगेगा कि प्रत्येक मिनट मूल्यवान उपहार है और इसका भरपूर उपयोग किया जाए।

दो-तीन मिनट हों दो - तीन घण्टे;
हमारे इस जीवन में उनका ज़्या अर्थ है?
समय के रूप में गिनने के अतिरिज़्त, कुछ और नहीं,
पर मिनट सोना हैं और घंटे महान।
किसी को खुश करने के लिए, किसी को हंसाने के लिए,
यदि एक बार हम उनका इस्तेमाल करके;
एक मिनट से किसी बच्चे के आंसू सूख पाएं,
एक घण्टे से किसी की वर्षों की पीड़ा मिटा सके।

मेरे समय के मिनटों से किसी की पीड़ा दूर हो सकती है
किसी की निराशा से मुझे मित्र मिल सकते हैं।[3]

(4) सबसे महत्वपूर्ण बात, मूल्यों की अपनी नई समझ से मैं *आत्मिक बातों को प्राथमिकता दे पाऊंगा।* परमेश्वर की इच्छा है कि हमारी प्राथमिकता यही हो (मज़्ी 6:33), लेकिन अधिकतर लोग परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों से दूर हो गए हैं। सांसारिक आकर्षण के मिट जाने की बात इतनी स्पष्ट हो गई है कि मेरा मन अब इन पर लगता ही नहीं, मुझे अब अनन्त बातों का ही ध्यान रहता है। इन आयतों जैसी दूसरी आयतें मेरे लिए एक नया अर्थ देती हैं: ''यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे ज़्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में ज़्या देगा?'' (मज़्ी 16:26)।

यदि मेरे पास जीने के लिए केवल एक और वर्ष हो तो निश्चय ही मेरा दृष्टिकोण बदल जाएगा।

मैं अतीत को सुधारने का हर प्रयास करूंगा

मृत्यु के सामने होने पर मुझे अपने अन्दर झांकने का अवसर मिलेगा। मैं नहीं चाहूंगा कि कुछ क्षणों में परमेश्वर के सामने खड़ा हूं और वह मुझसे कहे, ''तू कुछ काम छोड़ आया है।'' आदम से पूछे परमेश्वर के प्रश्न कि ''तू कहां है'' (उत्पज़ि 3:9) पर ध्यान दें। एक प्रचारक ने तीन बातों को ध्यान में रखते हुए, इस आयत पर संदेश दिया: (1)''हर कोई कहीं न कहीं है,'' (2) ''बहुत से लोग वहां हैं जहां उन्हें नहीं होना चाहिए,'' और (3) ''जो लोग वहां हैं जहां उन्हें नहीं होना चाहिए वे वहां जा रहे हैं जहां जाना नहीं चाहते!'' कहने का भाव यह कि मेरे लिए आत्मिक रूप में मुझे कहां होना *चाहिए* बहुत महत्वपूर्ण होगा।

जीने के लिए केवल एक और वर्ष मिलने पर मैं किसी को अपना शत्रु नहीं बना पाऊंगा। मैं *अपने साथियों से* पिछली सब रंजिशें दूर करने की कोशिश करूंगा। मसीह ने कहा था, ''... जाकर पहले अपने भाई से मेल मिलाप कर ...'' (मज़्ी 5:24)। अब स्वार्थ या घमण्ड मुझे यह कहने से रोक नहीं पाएंगे, कि ''मुझे खेद है। ज़्या आप मुझे क्षमा कर देंगे?'' इसके अलावा प्रभु की क्षमा पाने के लिए, मैं दूसरों के प्रति अपने मन में वैर भी नहीं रखूंगा (मज़्ी 6:14, 15)।

फिर मैं *परमेश्वर से* हिसाब साफ करना चाहूंगा। आइए हम सच्चाई का सामना करें: हम में से सब लोग उस स्तर से गिर गए हैं जिस पर हम अपने आपको देखना चाहते हैं। मैंने एक मण्डली के बारे में सुना था जिसमें महीने में एक बार संदेश दिया जाता था। यह पूछने पर कि वहां हर सप्ताह संदेश ज़्यों नहीं दिया जाता, एक सदस्य ने जवाब दिया, ''इससे अधिक लाभ नहीं होगा; हमें पहले ही मालूम है कि हम ज़्या कर रहे हैं।'' वचन के प्रति उनकी धारणा तो गलत थी ज़्योंकि यह प्रेरणा देने वाला हो सकता है, परन्तु उनकी बात हम सब पर लागू होती है। हम सब जो कुछ करते हैं उस सब के बारे में जानते हैं। बाइबल उसे ''पाप'' कहती है: ''इसलिए जो कोई भलाई करना जानता

है और नहीं करता, उसके लिए यह पाप है'' (याकूब 4:17)।

अपने अंदर झांकने पर, मैं देखूंगा कि मैंने कहां ''चूक की'' थी[4] ताकि मैं अपनी गलतियों को सुधार सकूं, चाहे वह पाप मेरी या दूसरों की नज़र में कितना भी छोटा ज़्यों न हो। एक छोटा सा लाल धज़्बा बढ़ रहे इन्फेज़्शन का संकेत हो सकता है। छोटी सी दीमक एक बहुत बड़े घर को खोखला कर सकती है। व्यज़्ति के जीवन में ''छोटी सी मूर्खता'' इत्र में मरी हुई मज़्ज़ियों की तरह है (सभोपदेशक 10:1)। इससे भलाई का हमारा कोई भी काम व्यर्थ हो सकता है। मेरा काम वचन के साथ अपने जीवन की तुलना करके यह देखना होगा कि मैंने कहां गलती की, ''बड़ा'' हो या ''छोटा'' मुझसे पाप कहां हुआ।

जीवन में किए अपने सब पापों को याद करके और मानकर, मुझे पता चल जाएगा कि आगे ज़्या करना है। गैर मसीही के लिए अपने पापों से मन फिराने, पाप बलि के रूप में यीशु में भरोसा रखना और उसकी मृत्यु में बपतिस्मा[5] लेना आवश्यक होगा (प्रेरितों 2:36-38; रोमियों 6:3-6)। लेकिन परमेश्वर का बालक होने के कारण मेरे लिए क्षमा की अलग व्यवस्था है: यदि मेरे पाप को केवल परमेश्वर ही जानता था, तो मैं परमेश्वर के सामने ही उन्हें मान सकता हूं। पतरस ने एक पथभ्रष्ट मसीही से कहा था, ''इसलिए अपनी इस बुराई से मन फिराकर प्रभु से प्रार्थना कर, संभव है तेरे मन का विचार क्षमा किया जाए'' (प्रेरितों 8:22)। यदि मेरे पाप का दूसरों को पता हो, तो मैं अपने प्रभाव पर विचार करके उनसे प्रार्थना करके और क्षमा के लिए बिनती करूंगा। याकूब कहता है, ''इसलिए तुम आपस में एक दूसरे के साज़्हने अपने-अपने पापों को मान लो; और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो, जिससे चंगे हो जाओ ...'' (याकूब 5:16)।

जीवन में किए हुए अपने हर पाप को मानकर, मैं उन पापों के लिए जो मुझसे जाने या अनजाने में हुए हों, घुटनों पर होकर दाऊद की तरह प्रार्थना करूंगा: ''अपनी भूलचूक को कौन समझ सकता है? मेरे गुप्त पापों से तू मुझे पवित्र कर'' (भजन संहिता 19:12)। मेरी प्रार्थना होगी कि परमेश्वर ऐसी गलतियों को ढूंढ़ने में मेरी सहायता करे ताकि मैं उन्हें दूर कर सकूं।

यदि जीने के लिए मुझे एक ही वर्ष मिला हो, तो मैं पिछली हर बात को निपटाने का प्रयास करूंगा।

मैं भविष्य बनाने के लिए अपनी पूरी कोशिश करूंगा

इसके बाद, मैं अपने आपसे पूछूंगा, ''इस जीवन को त्यागने से पहले कौन सी ज़िज़्मेदारियां निभानी आवश्यक हैं?'' सबसे पहले ''मैं''अपने परिवार के लिए सोचूंगा; मैं उनके सांसारिक भविष्य को सुनिश्चित करने की पूरी कोशिश करूंगा। ''... यदि कोई अपनों की और निज करके अपने घराने की चिन्ता न करे, तो वह विश्वास से मुकर गया है, और अविश्वासी से भी बुरा बन गया है'' (1 तीमुथियुस 5:8)। परन्तु उनका आत्मिक भविष्य या भलाई भी मेरी पहली प्राथमिकता होगी। बुद्धिमान ने कहा है, ''लड़के को शिक्षा उसी मार्ग की दें जिसमें उसको चलना चाहिए, और वह बुढ़ापे में भी उससे न हटेगा''(नीतिवचन 22:6)। उन्हें पहले सिखाने में असफल रहने पर मुझे दुख होगा और

आने वाले वर्ष में मैं उसे सुधारने की कोशिश करूंगा।

माता-पिता के लिए मूसा के निर्देशों का पालन करने की कोशिश करते हुए, मैं बैठते हुए, चलते हुए, लेटते हुए, और उठने के समय अपने बच्चों को प्रभु के मार्ग की शिक्षा मन लगाकर दूंगा (व्यवस्थाविवरण 6:7)। अपने पास थोड़ा समय बचा होने पर, मेरा लक्ष्य यह सुनिश्चित करना होगा कि वे भविष्य में मसीह के प्रति विश्वासी रहें। मैं अपने बच्चों के साथ मिलकर आराधना करूंगा और बाइबल अध्ययन करूंगा और उन्हें कलीसिया में बाइबल की क्लासों आदि में भेजूंगा;[6] "उसी मार्ग की शिक्षा देने के लिए जिसमें उन्हें चलना चाहिए" मैं अपनी पूरी कोशिश करूंगा।

सज़्भव हुआ, तो मैं उनके भविष्य के लिए उन्हें मसीही शिक्षा ही दिलाऊंगा।[7] मसीही स्कूल जिसमें मसीही शिक्षक, मसीही साथी और मसीही माहौल हो उनके लिए मसीही शिक्षा में बने रहने का अति उज़म स्थान होगा।

फिर अपनी ज़िज़्मेदारियों पर विचार करते हुए, मैं प्रभु के काम पर यह विचार करूंगा। पौलुस के शज़्द प्रासंगिक हो सकते हैं:

> ... यदि शरीर में जीवित रहना ही मेरे काम के लिए लाभदायक है तो मैं नहीं जानता, कि किस को चुनूं। ज़्योंकि मैं दोनों के बीच अधर में लटका हूं; जी तो चाहता है कि कूच करके मसीह के पास जाकर रहूं, ज़्योंकि बहुत ही अच्छा है। परन्तु शरीर में रहना तुज़्हारे कारण और भी आवश्यक है (फिलिप्पियों 1:22-24)।

लेन-देन निपटा लेने के बाद, मेरा जाना मेरे लिए लाभदायक होगा, परन्तु इससे प्रभु के लिए मेरा परिश्रम भी खत्म हो जाएगा। मसीह के काम के लिए यह अच्छा नहीं होगा। अपनी इच्छा में प्रभु के काम को याद रखकर मैं इसके बढ़ते रहने में सहायता कर सकता हूं।[8]

प्रभु के काम को आगे बढ़ाने का सबसे अच्छा ढंग उन आत्माओं का उद्धार है जो मेरे बाद प्रभु के काम को आगे बढ़ा सकते हैं। बचे हुए साल में उन्हें मसीह में लाने के लिए मैं पूरी कोशिश करूंगा। परमेश्वर का कहना है कि उसका वचन कभी खाली वापस नहीं आएगा (यशायाह 55:11) और यह कि बपतिस्मा किसी को सिखाने का स्वाभाविक परिणाम है (मज़ी 28:19)। इसके अलावा उसने उन लोगों को जो अवसर ढूंढ़ते हैं दिखाया है कि वह "द्वार खोलता" है (1 कुरिन्थियों 16:9)। मेरा मानना है कि यदि कोई एक वर्ष में एक आत्मा को सचमुच बचाना चाहे तो परमेश्वर उसे अवसर देगा।

आत्मा बचाने का यह प्रयास संसार की भलाई के लिए मेरा सबसे बड़ा योगदान होगा। बहुत से लोगों ने अपने अंतिम दिन स्मारक आदि बनाने में बिताएं हैं ताकि लोग उन्हें न भूलें। मिसर के पिरामिड राजाओं की कब्रें नहीं तो और ज़्या हैं? आज हम पिरामिडों के बारे में तो जानते हैं लेकिन उन राजाओं का कुछ पता नहीं है। सांसारिक स्मारक अपना महत्व खो देते हैं। परन्तु यदि हम एक आत्मा को बचाते हैं तो हम कभी न खत्म होने वाला एक जीवित स्मारक बनाते हैं। वह आत्मा दूसरों पर प्रभाव छोड़ेगी, जो आगे दूसरों पर छोड़ते रहेंगे। प्रभु द्वारा दिए

जाने वाले उद्धार की यह कड़ी अगली से अगली पीढ़ी तक इसी तरह चलती रहेगी।

यदि मेरे पास जीने के लिए केवल एक वर्ष हो, तो मैं प्रभु के काम को बढ़ाने के लिए और अपना भविष्य बनाने के लिए भी काम करना चाहूंगा।

मैं अपने आत्मिक जीवन को बढ़ाऊंगा

केवल एक वर्ष में, मेरी आत्मा परमेश्वर जो आत्मा है, के सामने जाएगी (यूहन्ना 4:24)। उसके सामने केवल आत्मिक लोग ही होंगे। उस परमेश्वर के सामने जाने के लिए तैयार होने में मेरे लिए आत्मिक उन्नति करना आवश्यक है।

मेरे लिए आत्मिक उन्नति के दो क्षेत्र खुले रहेंगे। पहला तो अधिक सार्वजनिक है और देह अर्थात कलीसिया के जीवन से सज़्बन्धित है (इफिसियों 1:22, 23)। मैं कलीसिया की सभी आराधना सभाओं में जाने की कोशिश करूंगा ज़्योंकि परमेश्वर चाहता है कि मैं ऐसा करूं (इब्रानियों 10:25) और ज़्योंकि उन आराधनाओं में मेरी आत्मिक उन्नति होगी। मैं कलीसिया के काम में सक्रिय योगदान दूंगा। मुझे इस बात का दुख होगा कि मैंने पिछले समय में अपने गुणों और योग्यताओं को और अधिक काम करने के लिए ज़्यों नहीं बढ़ाया। किसी के कहे बिना ही, मैं जो भी सेवा कर सकूं उसे स्वेच्छा से करने के लिए अपने आपको दे दूंगा ताकि यीशु से यह सुन सकूं, ''धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास'' (मज़्ी 25:21क)।

इसके अलावा, मैं अपने प्रयासों में और लगा रहने की कोशिश करूंगा। प्रभु की सेवा में मैं कई बार ''गर्म'' और ''सर्द'' होने के बीच में फंस जाता हूं। हम पढ़ते हैं कि प्रारज़्भिक मसीही ''लौलीन'' रहते थे (प्रेरितों 2:42)। पौलुस कहता है, ''दृढ़ और अटल रहो, और प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते जाओ'' (1 कुरिन्थियों 15:58)। यीशु ने स्वयं कहा कि वह अपने गुनगुने चेलों से घृणा करता है (प्रकाशितवाज़्य 3:16)। पृथ्वी पर अपने अंतिम वर्ष में, मैं प्रभु के काम के लिए हर समय ''गर्म'' रहने की कोशिश करूंगा। किसी ने लिखा है:

> जीवन एक ही बार मिला है,
> यह भी शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा;
> बाकी केवल वही रहेगा
> जो मसीह के लिए किया।[5]

आत्मिक उन्नति के लिए दूसरा क्षेत्र अधिक व्यज़्तिगत है। मैं बाइबल का अध्ययन करता रहूंगा। न कर पाने के लिए कोई बहाना नहीं दूंगा, कि ''मैं बहुत थक गया हूं'' या ''मेरे पास समय नहीं है।'' ईमानदारी से मुझे यह मानना पड़ेगा कि मैं परमेश्वर के वचन के साथ समय बिताने के बजाय समाचार पत्रों और टेलीविज़न पर अधिक समय बिताता हूं। नाश हो जाने वाली वस्तुओं के आकर्षण खत्म होने से, अधिक से अधिक बाइबल की ओर जो कि अनन्त बातें बताती है, आकर्षित होना स्वाभाविक ही होगा। अपने अध्ययन में मैं अधिक ''गंभीर'' होना चाहूंगा जिससे ''परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करने

वाला [ठहरूं], जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो'' (2 तीमुथियुस 2:15)। बाइबल कहती है कि विश्वास वचन को सुनने से आता है (रोमियों 10:17)। विश्वास के बढ़ने पर नई शांति और सुरक्षा पाकर, अपनी समयसारणी में पहले लगातार बाइबल अध्ययन शामिल न करने का मुझे खेद होगा।

अंत में मैं लगातार परमेश्वर से संवाद करना चाहूंगा ज़्योंकि शीघ्र ही मैं उसके सामने जाने वाला हूं। पौलुस मुझे बताता है कि कैसे ''निरन्तर प्रार्थना में लगे [रहूं]'' (1 थिस्सलुनीकियों 5:17)। पिछले समय में हो सकता है कि मैंने परमेश्वर की ओर से मिलने वाली आशिषों के लिए उसका धन्यवाद देने में लापरवाही की हो, निर्णय लेने में परमेश्वर से बुद्धि मांगने और क्षमा के लिए उससे बिनती करने की उपेक्षा की हो। अपने केवल थोड़े से सीमित रहते समय में, मैं उसके साथ घंटों बातें करना चाहूंगा। पिछले समय में मेरी दो मिनट की प्रार्थना से मेरी आत्मिकता पर कर लगा होगा, परन्तु अब मेरा मन इतना भरपूर होगा कि अपने सारे विचारों के लिए मुझे एक घण्टा भी कम लगेगा।

हां यदि मुझे केवल एक और वर्ष जीवित रहना हो, तो मैं पूरी तरह से आत्मिक होने की कोशिश करूंगा ताकि उस तैयार जगह के लिए जिसे स्वर्ग कहा जाता है अपने आपको तैयार कर सकूं।

सारांश

ये कुछ निष्कर्ष हैं जो मैंने ''यदि जीने के लिए मेरे पास केवल एक ही वर्ष हो'' प्रश्न पर विचार करते हुए निकाले? इस प्रश्न पर ध्यानपूर्वक मनन करने से किसी के भी जीवन में बदलाव आ जाएगा।

हर साल या महीने या सप्ताह या दिन हमारा जीवन ऐसा ही होना चाहिए जैसे पृथ्वी पर यह हमारा अंतिम समय है। जॉन वैसले से जब पूछा गया कि यह पता चलने पर कि पृथ्वी पर उसका अंतिम समय है, वह उस समय को कैसे बिताएगा, उसका उज़र था: ''ज़्यों, वैसे ही जैसे अब बिताता हूं। शाम को और फिर सुबह पांच बजे मुझे ग्लोसेस्टर में प्रचार करना है।... फिर मुझे मार्टिन के घर की मरज़्मत करनी है, परिवार के लोगों के साथ प्रार्थना कर के वचन बताऊंगा, फिर हर रोज़ की तरह रात 10 बजे अपने आपको स्वर्गीय पिता के हाथों में आराम से सोने और सुबह उसकी महिमा के लिए उठने [की आशा से] लेट जाऊंगा।'' अन्य शज़्दों में, उसने कहा कि वह हर रोज़ की तरह आज भी वैसे ही जीएगा जैसे पृथ्वी पर यह उसका अंतिम दिन ही हो। हमें मरने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए; ज़्योंकि यदि हमने मरने की तैयारी नहीं की है तो जीने के लिए भी हम तैयार नहीं हैं।

ज़्या हो यदि *आपके* पास जीने के लिए केवल एक ही वर्ष हो? ज़्या आप तैयार होंगे? ज़्या आपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा ले लिया है (प्रेरितों 2:38)? यदि आप मसीही हैं तो ज़्या आप विश्वास में स्थिर हैं (प्रकाशितवाज़्य 2:10)? यदि आपने प्रभु की आज्ञा नहीं मानी, तो अभी समय लें!

पाद टिप्पणियां

[1]जब भी आप इस पाठ का इस्तेमाल करें, वर्तमान वर्ष लिख लें। इस प्रवचन का एक पहले का संस्करण *द डे क्राइस्ट केम (अगेन) एण्ड अदर सरमन्स* (डैलेस: क्रिश्चियन पब्लिशिंग कं., 1965), 198–210 में मिलता है। [2]जॉन बार्टलेट, *फैमिलियर कोटेशन्स,* 16वां संस्क. सामा. संस्क. जस्टिन कैपलन (बोस्टन: लिटल, ब्राउन एण्ड कं., 1992), 310 में उद्धृत, *पूअर रिचर्ड'स अलमेनेक* (जून 1746)। [3]लेखक अज्ञात। [4]''पाप'' शब्द का मूल अर्थ ''निशाना चूकना'' है। [5]बपतिस्मे का अर्थ पानी में डूबोना ही है। [6]अपने क्षेत्र में बच्चों को सिखाने के अवसरों के बारे में बताएं। हमारे यहां गर्मियों के दिनों में बाइबल कैम्प और विशेष ट्रेनिंग कार्यक्रम शामिल किए जा सकते हैं। [7]यह अवसर हर जगह नहीं मिलता, परन्तु मैं उन क्षेत्रों के लिए ज़ोर देना चाहता हूं जहां यह उपलब्ध है। [8]उदाहरण के लिए कोई आदमी अपनी वसीयत में ट्रुथ फ़ॉर टुडे जैसे और नेक कामों के साथ स्थानीय कलीसिया को शामिल कर सकता है। [9]लेखक अज्ञात।